सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या–cm-553
11/11/2017

प्राकृतिक तरीके से बच्चों को शिक्षित कर उनके अंदर की प्रतिभा को उभारा जा सकता है :– मुख्यमंत्री

पटना, 11 नवम्बर 2017 :– श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में शिक्षा दिवस समारोह का मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्म दिवस के मौके पर वर्ष 2007 से ही आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने मौलाना अबुल कलाम आजाद के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा–सुमन अर्पित किया। शिक्षा दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री ने बिहारवासियों एवं देशवासियों को बधाई दी। समारोह को संबोधित करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्म दिवस पर शिक्षा दिवस मनाने की मांग की जाती थी। इसी दौरान हमलोगों ने निर्णय लिया कि इसकी शुरुआत की जाय। पांच सितंबर को देश के दूसरे राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है और 11 नवंबर को मौलाना अबुल कलाम आजाद के जन्म दिवस पर शिक्षा दिवस मनाते हैं। वर्ष 2007 से इसकी शुरूआत की गयी है। मौलाना अबुल कलाम आजाद एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे। देश की आजादी की लड़ाई में इनका बहुत बड़ा योगदान था। आजादी के साथ ही बंटवारे के कारण सांप्रदायिक तनाव का माहौल बन गया था। आजाद साहब की देश में साम्प्रदायिक तनाव को शांत करने में भूमिका तो रही ही, साथ ही अल्पसंख्यकों को यह भरोसा दिलाने में कामयाब रहे कि यह देश तुम्हारा है और इसी देश में तुम रहो। आजादी के बाद स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद बने। उनका शिक्षा के क्षेत्र में योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में नए और प्रभावकारी कदम उठाए गए, जिसका अच्छा परिणाम आज देखने को मिलता है। आई0आई0टी0 की शुरुआत की गई। यू0जी0सी0 की स्थापना भी उनके द्वारा की गई थी। हमारे शिक्षा दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य यही है कि नई पीढ़ी इन चीजों को जाने। इतिहास की सही जानकारी होगी तो आगे के लिए रास्ता सुगम होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 100 साल पहले चंपारण सत्याग्रह की शुरुआत इसी बिहार की धरती से हुई थी। नीलहों के अत्याचार की जानकारी पं0 राजकुमार शुक्ल द्वारा महात्मा गांधी को दी गई। शुक्ल जी के अथक प्रयास के बाद गांधी जी कलकत्ता होते हुए 10 अप्रैल को पटना पहुंचे और मुजफ्फरपुर होते हुए मोतिहारी पहुंचे थे। किसानों को उनका हक दिलाने में गांधी जी सफल हुए। मुख्यमंत्री ने कहा कि चंपारण सत्याग्रह के वर्ष 2017 में सौ साल पूरा होने पर बिहार में हमलोग पूरे साल को शताब्दी वर्ष के रुप में मना रहे हैं। हमलोगों ने इसी कृष्ण मेमोरियल हॉल में देश भर के स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित किया था। इस अवसर पर तत्कालीन राष्ट्रपति भी उपस्थित हुए थे। उसके पहले 10 और 11 अप्रैल को गांधी जी के विचारों पर राष्ट्रीय विमर्श का आयोजन किया गया था। इस तरह कई प्रमुख जगहों पर आयोजन किए गए हैं, जहां पर गांधी जी गए थे। अभी आगे भी 20 नवंबर 2017 को भितिहरवा में कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। गांधी जी ने चंपारण सत्याग्रह के दौरान न

सिर्फ किसानों को उनका हक दिलाया बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता पर भी विशेष काम किया। सामाजिक भेदभाव, छुआछूत, जाति प्रथा उन्मूलन के लिए भी काम किया। चंपारण सत्याग्रह के दौरान उनके सहयोग के लिए आए वकीलों के अलग–अलग रसोइये थे। जातिय आधारित रहन–सहन था। गॉधी जी ने इनलोगों को समझा–बुझाकर भेदभाव समाप्त कराया और सबका रहन–सहन और खान–पान एक साथ कराया। गॉधी जी ने चंपारण में छह स्कूल खुलवाए, जिसमें बड़हरवा–लखनसेन, भितिहरवा के स्कूल शामिल हैं, जहां कस्तुरबा गांधी जी भी गई थीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा के प्रसार के लिए प्राकृतिक तरीके को अपनाया जाना चाहिए। जैसा कि प्रो0 एच0सी0 वर्मा ने विस्तार से बताया है। क्लास में सिर्फ पढ़ा देने से बच्चों को जानकारी मिल जाती है लेकिन उसके अंदर की प्रतिभा सामने नहीं आ पाती है। उन्होंने कहा कि हमें प्रकृति के बनाए रास्ते पर ही चलना चाहिए। आज दुनिया भर में प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। पूरी दिल्ली फॉग से परेशान है। विजिंग में अमेरिकी राष्ट्रपति के पहुंचने पर विशेष अभियान चलाकर फॉग को हटाने का काम किया गया। मनुष्य को इस बात का भ्रम हो गया है कि प्रकृति पर हम काबू पा लेंगे, यह संभव नहीं है। हमारा हमेशा से मानना है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ नहीं करना चाहिए बल्कि प्रकृति के अनुरुप ही चलना चाहिए। गांधी जी ने हमेशा पर्यावरण पर जोर दिया था। उनका कहना था कि यह पृथ्वी मनुष्य की जरुरतों को पूरा करने में सक्षम है, लालच को नहीं। अपनी सुविधा और अपने लालच के लिए प्रकृति के साथ छेड़छाड़ आत्मघाती होगा। गंगा की अविरलता और इसकी निर्मलता की हालत आज क्या हो गई है ? आज से पचास वर्ष पहले बचपन में मैं खुद गंगा में स्नान करता था और पीने के लिए पानी भी घर लेकर जाता था। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ से होने वाले दुष्परिणाम हमारी आने वाली पीढ़ी के साथ अन्याय है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक तरीके से ही बच्चों को शिक्षित कर उनके अंदर की प्रतिभा को उभारा जा सकता है। देश में 125 करोड़ की आबादी है, जिसमें बिहार की आबादी 12 करोड़ है। उसमें ढाई करोड़ हमारे स्कूली बच्चे हैं। उनको कैसे शिक्षित करें, शिक्षा का प्रसार कैसे हो, इस दिशा में कैसे आगे बढ़ें ? उन्होंने कहा कि वर्मा साहब आप कानपुर में शिक्षा का एक मॉडल बनाकर एक स्कूल चला रहे हैं। आप बिहार के हैं, यहां भी एक मॉडल चलाइये, राज्य सरकार इसमें पूरा सहयोग करेगी। उन्होंने कहा कि शिक्षा का मतलब सबकी शिक्षा है, नारी की शिक्षा भी है। पहले नारी शिक्षा की स्थिति खराब रही है। गरीबी के कारण, पोशाक की कमी के कारण हमारे यहां अभिभावक अपनी लड़कियों को स्कूल नहीं भेजते थे। हमने इसके समाधान के लिए बालिका पोशाक योजना, साइकिल योजना चलायी। जिसके कारण मिडिल स्कूलों में लड़कियों की संख्या आज लड़कों से ज्यादा हो गई है। पहले 9वीं क्लास में 1 लाख 70 हजार लड़कियों की उपस्थिति थी जो इन योजनाओं के लागू होने के बाद 9 लाख से भी ज्यादा हो गई है। मैट्रिक में आज इनकी संख्या 49 प्रतिशत हो गई है। साइकिल योजना लड़कों के लिए भी चलायी गई। पहले शहरों में लड़कियॉ साइकिल चलाते हुये नहीं हीं देखी जाती थी, गांवों में तो यह संभव ही नहीं था। आज जब स्कूल के लिए लड़कियां झूंड में साइकिल चलाते हुए निकलती हैं तो लोगों के चेहरे पर प्रसन्नता आ जाती है। इससे लड़कियों के अरमानों को पंख लग गए एवं उनकी इच्छा जाग गई। हमलोग लड़के और लड़कियों को एक साथ पढ़ाने के लिए को–एजुकेशन प्रणाली को अपना रहे हैं। अभी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ करना बाकी है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अभी और काम करना है, आदर्श स्थिति को प्राप्त करना है। हमलोग नए प्रयोग करने को तैयार हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार का इतिहास समृद्ध है, यहॉ की भूमि उपजाऊ है, यहॉ के लोग मेहनती हैं, यहॉ के युवा मेधावी हैं। दुनिया का पहला गणतंत्र यहीं वैशाली में है, महावीर

का जन्म, ज्ञान और निर्वाण स्थली यहीं है। बुद्ध की ज्ञान की भूमि है। सिखों के 10वें गुरू गुरु गोविंद सिंह जी की जन्मस्थली है। चाणक्य ने अर्थशास्त्र यहीं लिखा। आर्यभट्ट ने दुनिया को शून्य यहीं दिया। उन्होंने कहा कि झारखंड से अलग होने के बाद आज बिहार अपनी अलग पहचान बना चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा पीढ़ी को जागरुक करना है। हमलोगों ने सरकारी स्कूल के बच्चे–बच्चियों के भ्रमण की व्यवस्था करवायी है ताकि बिहार के तमाम बच्चे ऐतिहासिक स्थलों को जान सकें, समझ सकें। छात्र जीवन में मैं पटना संग्रहालय जाया करता था। जो सौ साल पुराना है। मुख्यमंत्री बनने के बाद भी गए थे। इसमें काफी प्रदर्श है। हमने सोचा कि प्रदर्श की प्रदर्शनी के लिए क्यों नहीं आधुनिक म्यूजियम की स्थापना कि जाय, जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर का हो। बिहार संग्रहालय का निर्माण हो चुका है, जो अपने आप में विशिष्ट है। बच्चों के लिए जो म्यूजियम की शाखा बनी है, वह काफी लोकप्रिय है। बिहार म्यूजियम के बनने के बाद भी पटना म्यूजियम में अभी और भी प्रदर्श हैं। हमने निर्णय लिया है कि पटना म्यूजियम को और विकसित तथा उसका विस्तार किया जाएगा। उसका डिजायन तैयार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रकृति हो, पर्यावरण हो, चाहे अपना इतिहास हो, इन सब चीजों के प्रति जानकारी होनी चाहिए, जागरुकता होनी चाहिए। इस पृष्ठभूमि के साथ हमारे शिक्षा का स्तर ऊंचा उठना चाहिए, हर एक के अंदर की जो प्रतिभा है, उसको उभारना चाहिए। हमें अपने युवाओं की प्रतिभा पर पूरा भरोसा है। आज बिहार के युवा चाहे नौकरी या कोई और परीक्षा हो, उसमें बिहार के युवा काफी संख्या में उतीर्ण होते हैं। मुझे विश्वास है कि नए ढंग से शिक्षा का विकास होने पर हमारे युवा और भी मेधावी होकर उभरेंगे और सचमुच बिहार फिर से ज्ञान की भूमि बनेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने प्रख्यात शिक्षाविद् आई0आई0टी0 कानपुर में भौतिकशास्त्र के प्रो0 श्री हरीश चंद्र वर्मा जी को वर्ष 2017 का मौलाना अबुल कलाम आजाद शिक्षा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री हरीश चन्द्र वर्मा को मुख्यमंत्री ने अंगवस्त्र, प्रशस्ति पत्र और ढाई लाख रुपए का चेक प्रदान किया। मुख्यमंत्री ने मौलाना अबुल कलामा आजाद की जीवनी पर आधारित लगाए गए पुस्तकों और चित्रों की प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया।

इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा ने भी समारोह को संबोधित किया। इस अवसर पर प्रख्यात शिक्षाविद् श्री हरीश चंद्र वर्मा, शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री आर0के0 महाजन, शिक्षा विभाग के सचिव श्री रॉबर्ट चेन्थ्यू, प्रमंडलीय आयुक्त पटना श्री आनंद किशोर, मुख्यमंत्री के सचिव श्री मनीष कुमार वर्मा, शिक्षा विभाग के अपर सचिव श्री मनोज कुमार, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद श्री संजय कुमार सिंह, निदेशक प्राथमिक शिक्षा श्री एन0 रामचंद्र डू, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री राजीव प्रसाद सिंह रंजन, शिक्षकगण, अन्य गणमान्य व्यक्तिगण एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

******